THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

तुम्हारा वर्तमान दृष्टिकोण
Your present standpoint

Author – Mark Swinney

Christian Science Sentinel Volume 116, Issue 14, April 7, 2014

जब कभी भी आप लगातार अपने जीवन में आध्यात्मिक सम्पूर्णता के लिए जगह बनाते हो, एक दूरस्थ लक्ष्य नहीं – अपितु अपना वर्तमान दृष्टिकोण, अच्छी चीजें सदा होती हैं। अभाव, बीमारी और पाप रुक नहीं पाते अपितु लुप्त हो जाते है जिस प्रकार आध्यात्मिक वास्तविकता सहज भाव से तथा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

आध्यात्मिक सम्पूर्णता क्या है? और व्यवहारिक रूप में आध्यात्मिक सम्पूर्णता को अपना वर्तमान दृष्टिकोण बनाने के लिए सही आधार क्या है? यह सम्पूर्णता वास्तव में परमेश्वर की पृवति से कम किसी में भी नहीं पाई जाती। आपका और मेरा वास्तविक सार सर्वव्यापक वास्तविकता के स्वरूप, जो कि दिव्य आत्मा, परमेश्वर है, से उत्पन्न होता है। जीसस ने इसे स्पष्ट रूप से देखा तथा इसे अनुभव किया, जिस प्रकार मेरी बेकर एडी व्याख्या करती है : ''अपने पुनरूत्थान तथा आरोहण में, जीसस ने दर्शाया कि एक नश्वर मानव, पुरूषत्व का वास्तविक सार नहीं है, और यह कि अवास्तविक भौतिक नश्वरता वास्तविकता की उपस्थिति में लुप्त हो जाती है'' (साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्किप्चर्स पृष्ठ 292–293)।

परमेश्वर की रचना होने के नाते, तुम अपना सफ़र भौतिकता के अंदर तथा बाहर कभी नहीं करोगे। इसे समझना काफी हद तक तुम्हें आध्यात्मिक सम्पूर्णता को अपना वर्तमान दृष्टिकोण बनाने में सहायता करता है। यह परमेश्वर की प्रवृति है, न कि शारीरिकता की प्रवृति, जो कि तुम्हारा वर्तमान रुतबा निर्धारित करती है। परमेश्वर ने तुम्हें एक छोटी, पृथक नहीं बल्कि सम्पूर्ण रचना बनाया है। पृथक्करण मानव से परमेश्वर के सम्बन्ध में कोई भूमिका नहीं निभाता। केवल एक ही परमेश्वर है; केवल एक ही सम्पूर्णता है–परमेश्वर की सम्पूर्णता।

संसार हमें विश्वास करवाने की कोशिश करता है कि हम धूल से जन्में पुरूष तथा स्त्रियाँ हैं, जीवन में बिना किसी उद्देश्य या भविष्य के। किन्तु हमारी प्रवृति परमेश्वर ने बनाई है। हमारा उद्गम केवल परमेश्वर में है, और इसी कारण हम विद्यमान है–परमेश्वर की वर्तमान सम्पूर्णता, सार और प्रवृति को दर्शाने के लिए।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

केवल एक ही परमेश्वर है; केवल एक ही सम्पूर्णता है–परमेश्वर की सम्पूर्णता!

हमें अपनी सोच को सही मॉडल के साथ भरते रहना चाहिए, जो कि "नया मानव" है।

भौतिक विद्यमानता का सांसारिक मॉडल एक पुराना, घुटन से भरा हुआ, यहाँ तक कि निराशाजनक मॉडल है। इसी कारण प्रेरक पॉल ने लोगों को झकझोर दिया उनके लिए एक पुकार के साथ "पुराने मानव को उसके कार्यों के साथ त्याग दो," तथा इसके बजाए "नया मानव धारण कर लो, जो कि जिसने उसे रचा था, उसके रूप के अनुसार ज्ञान में नया बनता जाता है" (कुलुस्थियों 3:9, 10)

मैंने पाया कि कई बार जब लोग प्रार्थना करते हैं वे मानव के उस पुराने मॉडल को त्यागना पूरी तरह से भूल जाते हैं। परिणाम? उनका आत्मविश्वास खत्म हो जाता है। मेरी बेकर एडी ने एक ईस्टर रविवार की सुबह अपने घर के सदस्यों के साथ बात करते हुए पॉल के शब्दों को दोहराया : "तुम्हें 'पुराने पुरूष' को, पुरानी स्त्री को त्याग देना होगा; तुम उन्हें बेहतर नहीं बना सकते और रख नहीं सकते । यदि आप उसे बेहतर बनाने का प्रयत्न करते हो आप पुराने मानव को त्याग नहीं रहे हो। यदि तुम उसे बेहतर बनाने में सफल हो जाओगे वह आपके साथ ही रहेगा। यदि तुम पुराने के साथ सुलझा लेते हो और कहते हो यह ठीक ठाक है, आप इसे उतार नहीं फेंकते, अपितु इसे संभाल कर रखते हो। यदि आप पुराने को संतोषजनक बनाने की कोशिश करते हो, आप इसे पास रखने की तैयारी कर रहे हो, इसे उतार फेंकने की नहीं" (वी न्यू मेरी बेकर एडी, विस्तृत एडिशन, Vol II पृष्ठ 167)।

बाइबल और श्री मति एडी की रचनाओं के मेरे अध्ययन के द्वारा, मैंने सीखा कि सोच के विषय क्षेत्र के अन्दर, जो कि प्रार्थना करने के लिए हमारा कार्यस्थल है, हमें आनन्दित होना चहिए जैसे ही हम मान लेते हैं कि हम पुरूष (या स्त्री) की किसी पुरानी भौतिक धारणा के साथ सुलझाने में बिल्कुल भी इच्छुक नहीं है–उसके साथ जो कि अन्तिम विश्लेषण में, वास्तव में विद्यमान ही नहीं होता। बजाए इसके, हमें अपनी सोच को सही मॉडल के साथ भरते रहना चाहिए, जो कि "नया मानव" है, जो कि **परमेश्वर** के अभिव्यक्त रूप से ज़रा भी कम नहीं है।

परमेश्वर की परिपूर्णता अक्षुण्ण है। दिन का प्रत्येक पल–तुम और प्रत्येक दूसरा "नया मानव" इस आशीषित पूर्णतः आध्यात्मिक परिपूर्णता के प्रभाव हैं। सीमित भौतिकता की एक रूपरेखा के अन्दर आध्यात्मिक सत्यों को कार्य करने देने की कोशिश क्यों करें, जब सब **परमेश्वर** है? "आनन्दित हो, क्योंकि आप सम्पूर्ण हो," एक सुप्रिय भजन की अन्तिम पंक्ति कहती है(जॉन रैन्डल डन क्रिश्चियन साँयस हिमनल नम्बर 374 © सी एस बी डी)। जैसे ही आप उस परिपूर्णता तथा सम्पूर्णता में आनन्दित होते हो जो **परमेश्वर** आपमें अभिव्यक्त करता है, आप बीमारी, पाप, तथा मृत्यु के लिए कम सम्मान दोगे।

उदाहरण के लिए, जीसस की एक अपंग स्त्री के साथ मुलाकात के बारे में सोचो, जो कि अठारह वर्षों से कुबड़ी हो गई थी और सीधी खड़ी नहीं हो सकती थी। उसे पूर्णतया मुक्त करने के लिए जीसस ने सिर्फ एक आदेश दिया : "हे स्त्री, तुम्हारी अशक्तता से मुक्त किया जाता है" (देखे लूका 13:11–17)। इस तरह की तात्कालिक राहत तब मिलती हे जब हम उस चीज़ को एक झूठ से ज्यादा कुछ भी नहीं समझते जिसका मुँह सत्य के द्वारा बंद करना होगा।

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

प्रार्थना में यह घोषणा करने का क्या फायदा कि सब कुछ **परमेश्वर** तथा **परमेश्वर** की अभिव्यक्ति है, यदि एक असहाय, इंसान में एक दृढ़ मत, इस घोषणा को नीचा दिखा रहा है? "केवल एक ही **परमेश्वर**, **पिता** है, जिसके कारण सब कुछ है, और हम उसमें," बाइबल कहती है (I कुरिन्थियों 8:6)। जैसे हम प्रार्थना करते हैं चेतना के चित्रपट को सम्पूर्ण मॉडल प्रतिबिम्बित करना होगा–**परमेश्वर** की सम्पूर्णता **परमेश्वर** की रचना में उपस्थित।

हम बहुत आभारी हो सकते हैं कि सारी वास्तविक मानसिक जगह का स्वामी **परमेश्वर** है। **परमेश्वर** नश्वरता की तुच्छ छवियों को उसी नश्वरता की बेहतर छवियों से नहीं बदलता; उपचार हो जाता है जब मानसिक चित्र केवल **परमेश्वर** के हों।

इसलिए, **परमेश्वर** के "नए मानव" को अपनी सोच में आमन्त्रित करो और चैन से रहो। भजनसंहिता का रचयिता गाता है जब मेरे मन में चिन्ताएं बढ़ जाती है तब तुम्हारी सान्तवना मेरी अन्तश्चेतना को प्रफुल्लित करती है (भजनसंहिता 94:19)। तुम्हारी वर्तमान आध्यात्मिकता, **परमेश्वर** की सम्पूर्णता की तुम्हारी अपराजित अभिव्यक्ति को सम्मिलित करते हुए, वास्तव में कभी भी तुम्हारा लक्ष्य नहीं हो सकता क्योंकि यह पहले से ही तथा पूर्ण रूप में तुम्हारा वर्तमान दृष्टिकोण है

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.